बी०ए० द्वितीय वर्ष
प्रथम प्रश्न-पत्र

– डॉ० कृपा शंकर यादव

जॉन लॉक (1632 – 1704)

→ रचनाएँ – ① सहिष्णुता पर पहला पत्र (A Letter on Toleration) 1689
② शासन पर दो प्रबन्ध (Two Treatises on Government) 1690
③ मनुष्य स्वभाव के सम्बन्ध में निबंध (Essay Concerning Human Understanding)

⇒ लॉक के चिन्तन को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ :–
– शासन के दैवी सिद्धान्त (निरंकुश राजतंत्र) का स्थान उदारवादी चिन्तन पर
– आधारित जनतांत्रिक सिद्धान्त लेता जा रहा था। गौरवपूर्ण क्रांति – 1688
– उपनिवेशों के निर्माण से वाणिज्य-व्यवसाय करने वाला वर्ग आर्थिक-स्वतंत्रता की माँग कर रहा था।

⇒ लॉक का सामाजिक समझौता सिद्धान्त :–

→ लॉक के अनुसार मानव स्वभाव – मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। वह सहानुभूति, सहयोग, प्रेम और दयालुता आदि मानवीय गुणों से युक्त है और उसके ही अनुसार आचरण करता है।

→ प्राकृतिक अवस्था – शांति, सद्भावना, पारस्परिक सहायता और रक्षा की अवस्था है।

→ प्राकृतिक कानून – इस अवस्था में प्रत्येक मनुष्य दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करता था जैसे कि वह दूसरों से अपने साथ चाहता था।
– प्राकृतिक अवस्था को समाप्त करने के लिए प्राकृतिक नियम होता है जो प्रत्येक को बाध्य करता है और प्रज्ञा (विवेक) जो कि उस कानून का ही दूसरा नाम है, सम्पूर्ण मानव समाज को, जो उसका प्रायः पालन करता है, यह सिखाता है कि सब लोग समान तथा स्वतंत्र हैं, इसलिए किसी को भी दूसरे के जीवन, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता एवं सम्पत्ति को क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए।